परास्नातक कार्यक्रम

सत्रीय कार्य
(जुलाई, 2021 तथा जनवरी, 2022 सत्रों के लिए)

MSK-001 संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

परास्नातक कार्यक्रम
सत्रीय कार्य (2020—21)

पाठ्यक्रम कोड : MSK–001/2021–21

प्रिय छात्र/छात्राओं

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :— सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : ——————————

नाम : ——————————

पता : ——————————

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ——————————

सत्रीय कार्य कोड : ——————————

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : ——————————

दिनांक : ——————————

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए, और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति :** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजि,।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई 2021 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2022

जनवरी 2022 सत्र के लिए : 30 सितंबर, 2022

सत्रीय कार्य

MSK–001 संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य

पाठ्यक्रम कोड –MSK: 001
पाठयक्रम शीर्षक – संस्कृत साहित्यशास्त्र एवं साहित्य
सत्रीय कार्य – MSK – 001/TMA 2021–2022

पूर्णांक – 100
नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

1. अधोलिखित की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :– 20X3= 60

(क) अस्य ग्रन्थस्य काव्याड्.गतया काव्यफलैरेव फलवत्त्वमिति काव्यफलान्याह –

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते।।

चतुर्वर्गफलप्राप्तिर्हि काव्यतो ''रामादिवत्प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत्'' इत्यादि कृत्याकृत्यप्रवृत्तिनिवृत्त्युपदेशद्वारेण सुप्रतीतैव
उक्तं च (भामहेन)–

''धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्''।। इति

अथवा

''अदोषं गुणवत्काव्यमलङ्.कारैरलङ्.कृतम्।
रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति''।।
इत्यादीनामपि काव्यलक्षणत्वमपास्तम्।

ध्वनिकार आचार्य आनन्दवर्धन के काव्य–लक्षण का खण्डन
यत्तु ध्वनिकारेणोक्तम्– ''काव्यस्यात्मा ध्वनिः'' इति तत्किं वस्तवलङ्.काररसादिलक्षणस्त्रिरूपो ध्वनिः काव्यस्यात्मा, उत रसादिरूपमात्रो वा ? नाद्यः, – प्रहेलिकादावतिव्याप्तेः। द्वितीयश्चेदोमिति ब्रूमः।

(ख) मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः।।

अथवा

तामुत्थाप्य स्वजलकणिकाशीतलेनानिलेन
प्रत्याश्वस्तां सममभिनवैर्जालकैर्मालतीनाम्।
वक्तुं धीरः स्तनितवचनैर्मानिनीं प्रक्रमेथाः।।

(ग) ऋग्वेदं सामवेदं गणितमथ कलां वैशिकीं हस्तिशिक्षां,
ज्ञात्वा शर्वप्रसादाद् व्यपगततिमिरे चक्षुषी चोपलभ्य।
राजानं वीक्ष्य पुत्रं परमसमुदयेनाश्वमेधेन चेष्ट्वा,
लब्ध्वा चायुः शताब्दं दशदिनसहितं शूद्रकोऽग्निं प्रविष्टः।

अथवा

खलचरित निकृष्ट जातदोषः कथमिह मां परिलोभसे धनेन।
सुचरितचरितं विशुद्धदेहं न हि कमलं मधुपाः परित्यजन्ति ।।

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए । 2X10= 20

2. रूपक के भेदों पर विस्तारपूर्वक लिखे।

3. साहित्यदर्पण के अनुसार काव्य लक्षण पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।

4. इतिवृत्त का लक्षण देते हुए उनके भेदों का वर्णन कीजिए।

5. मृच्छकटिकम् प्रकरण की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का चरित्र–चित्रण कीजिए। 2X5= 10

(क) वासवदत्ता (ख) यक्षिणी

(ग) यक्ष (घ) चारुदत्त

7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए। 2X5= 10

(क) धृष्ट नायक (ख) धीरोदात्त नायक

(ग) सूत्रधार (घ) भरतवाक्य